चमत्कारी नाड़ी ज्योतिष

165 वाँ अंक

ISO 9001-2008

ज्योतिष मंथन

वर्ष -14 अंक-9 फरवरी2013,

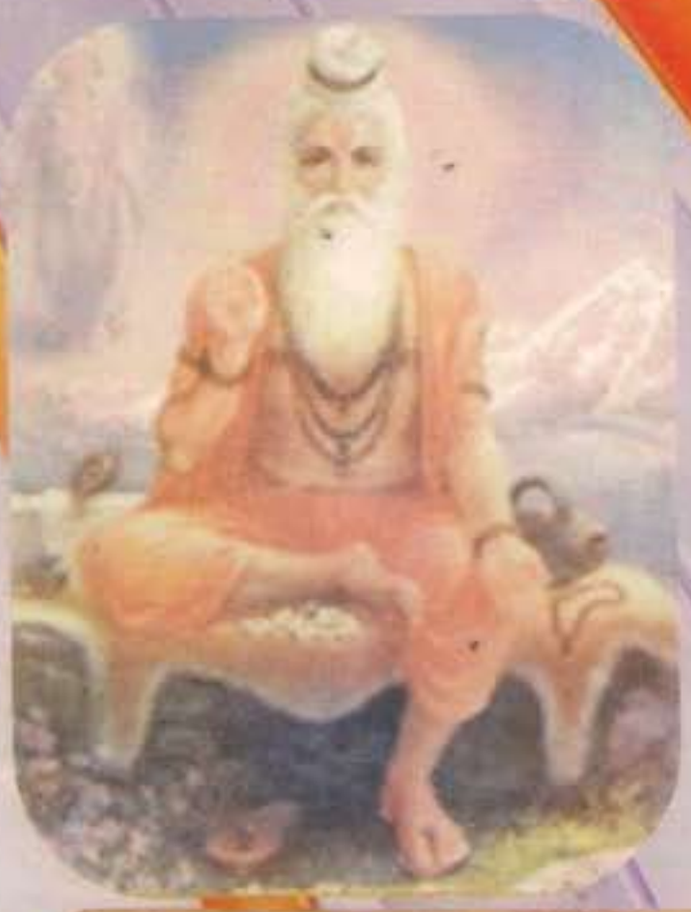

भारतीय प्राच्य विद्याओं की मासिक पत्रिका

माघ-फाल्गुन ,वि.संवत् 2069, शक संवत् 1934

शाबाश दामिनी !

तुम नारी रक्षा का प्रतीक रहोगी...

मूल्य:35/-

तकनीकी कार्यक्षेत्र के ग्रह योग

आचार्य के. विमलेन्दु

हर नौजवान व्यक्ति अपने कार्यक्षेत्र के विषय में जानने की इच्छा ज्योतिषी के सामने अवश्य रखता है। जीवन में कर्मक्षेत्र में उतरने से पहले हर व्यक्ति को अपने भविष्य की चिंता होती है और सफलता किस दिशा में मिलेगी यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न होता है। ज्योतिष के दृष्टिकोण से यह विषय बहुत गंभीर और महत्त्वपूर्ण है क्योंकि ज्योतिषी का मुख्य कार्य मार्गदर्शन होता है। जीवन में कोई विशेष विचारणीय विषय हो तो ज्योतिषी का उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है।

व्यक्ति कार्यक्षेत्र का निर्धारण जीवन के शिक्षणकाल में कर ले और उसके लिए प्रयत्नशील हो तो वह उस क्षेत्र में निश्चय ही उन्नति करता है। कुण्डली के आधार पर कार्य का निर्धारण कैसे किया जाए, इस पर क्रमवार विचार करते हैं -

किसी व्यक्ति का कार्यक्षेत्र निर्धारण करने के लिए सर्वप्रथम लग्न कुण्डली, चंद्र कुण्डली और सूर्य कुण्डली इन तीनों में जो सबसे बलवान हो, उसके दशम भाव का मूल्यांकन किया जाता है। इसके लिए दशम भाव, दशमेश और दशम भाव के लिए कारक ग्रह का विचार किया जाता है। सबसे पहले दशम भाव में स्थित ग्रह, दृष्टि डालने वाले ग्रह और दशमेश की स्थिति का विचार किया जाता है कि व्यक्ति को किस प्रकार के कार्य में अपना योगदान देना चाहिए। यदि तीनों लग्नों में सबसे बली से दशम में कोई ग्रह न हो और नहीं किसी ग्रह की दशम पर दृष्टि ही हो तो नवमांश कुण्डली में दशम भाव के स्वामी की स्थिति पर विचार करना चाहिए। साथ ही लग्न का भी महत्व कम नहीं है अत: लग्न को प्रभावित करने वाले ग्रहों को और लग्नेश की स्थिति पर विचार करना आवश्यक है।

अब प्रश्न यह उठता है कि व्यक्ति का कार्यक्षेत्र तकनीकी होना चाहिए या अतकनीकी। ग्रहों के आधार पर यदि देखा जाए तो शनि, मंगल, राहु और केतु को तकनीकी शिक्षा के लिए कारक ग्रह की संज्ञा दी गई है। इसके अलावा जो ग्रह हैं वे अतकनीकी शिक्षा के कारक ग्रह कहलाते हैं परंतु इनके आपस में संयोग करने के आधार पर तकनीकी शिक्षा की शाखा का निर्धारण होता है। जैसे कम्प्यूटर का ज्ञान होने के लिए मंगल के साथ शुक्र और गुरु की युति का होना आवश्यक होता है।

उसी प्रकार सूर्य का दशम भाव से संबंध हो तो व्यक्ति सरकारी सेवा, प्रशासनिक सेवा या प्रबंधन जैसे कार्य करता है। उसके लिए चिकित्सा सेवा भी अनुकूल व्यवसाय रहेगा क्योंकि सूर्य में रोग दूर करने की क्षमता है परंतु तकनीकी शिक्षा के कारक ग्रह मंगल दशम भाव और सूर्य से संबंध स्थापित करें तो चिकित्सा कार्य के लिए बल मिलेगा। यहाँ मंगल शल्य चिकित्सा के द्योतक ग्रह हैं। बुध औषधि के कारक ग्रह हैं अत: उसका संयोग चिकित्सा क्षेत्र में जाने के लिए सहयोगी होगा। यदि षष्ठ और द्वादश भाव से इन ग्रहों का संबंध हो तो चिकित्सा कार्य व्यक्ति के लिए सबसे प्रमुख कार्य होना चाहिए।

इसी प्रकार इंजीनियर बनने के लिए सिंह राशि के साथ मंगल और शनि का दशम भाव से संबंध बहुत उत्तम माना गया है क्योंकि शनि कार्य के प्रारूप को बनाने में मदद करते हैं एवं मंगल सृजन या निर्माण के कारक ग्रह हैं।

जैमिनी ज्योतिष शास्त्र में कारकांश कुण्डली के आधार पर कार्यक्षेत्र ज्ञात करने की विधि दी गई है परंतु पाराशरी सिद्धांत द्वारा कार्यक्षेत्र जानना ज्यादा सटीक होता है।

कर्म क्षेत्र में सफलता के लिए लग्न से दूसरा भाव - जो धन का भाव होता है, षष्ठ भाव - यह दशम से नवम भाव यानि कर्मक्षेत्र का भाग्य निर्धारक होता है, दशम भाव - व्यवसाय का भाव होने के कारण और एकादश भाव - आय का भाव होने के कारण यदि आपस में संबंधित हों, शुभ ग्रहों की स्थिति हो या शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट या युक्त हों तो व्यक्ति अपने कार्यक्षेत्र में सफल हो पाता है।

यदि दो या दो से अधिक ग्रह दशम भाव को प्रभावित कर रहे हों तो एक से अधिक माध्यम द्वारा धनार्जन होगा और यह धनलाभ उन ग्रहों की दशा में विशेष रूप से प्राप्त होगा। इसका विचार दशमेश का अन्य भावों के स्वामी के साथ संबंध होने से इस प्रकार हो सकता है:

- द्वितीयेश और दशमेश का संबंध होने से व्यक्ति बैंक अधिकारी होगा या सूद पर पैसा देगा।
- तृतीयेश और दशमेश का संबंध होने से व्यक्ति साहसिक कार्य, सेना या पुलिस से संबंधित कार्य करेगा।
- चतुर्थेश और दशमेश का संबंध होने से व्यक्ति जमीन और मकान से संबंधित कार्य करेगा।

- पंचमेश और दशमेश का संबंध होने से व्यक्ति सरकारी नौकरी करेगा या मंदिर और धर्म से संबंधित कार्य करेगा।
- षष्ठेश और दशमेश का संबंध होने से व्यक्ति डॉक्टर बनेगा या चोरी, लड़ाई, केस-मुकदमा से संबंधित कार्य करेगा।
- सप्तमेश और दशमेश का संबंध होने से व्यक्ति यात्रा से संबंधित कार्य करेगा। जैसे - रेलवे, डाक विभाग, दूरसंचार आदि।
- अष्टमेश और दशमेश का संबंध होने से व्यक्ति जिस किसी कार्य को करने का प्रयास करेगा, उसमें असफलता मिलेगी।
- नवमेश और दशमेश का संबंध होने से व्यक्ति धार्मिक और समाज कल्याण से संबंधित कार्य करेगा। इसके अलावा महान् कार्य जिससे आय की प्रचुरता हो, ऐसे कार्य में रुचि लेगा। नवमेश-दशमेश का संबंध कार्यक्षेत्र में सफलता के लिए अति श्रेष्ठ योग माना गया है।
- एकादशेश और दशमेश का संबंध होने से व्यक्ति व्यवसाय करेगा।
- व्ययेश और दशमेश का संबंध होने से व्यक्ति विदेश यात्रा द्वारा धनार्जन करेगा।

इसी प्रकार कुछ विद्वान् ज्योतिषविदों द्वारा ग्रहों के युति के आधार पर तकनीकी कार्य का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है। जैसे:

- **सूर्य-मंगल :** शल्य चिकित्सक बनने में मदद करता है।
- **सूर्य-चन्द्र-मंगल :** मैकेनिकल इंजीनियर या केमिकल इंजीनियर।
- **सूर्य-शनि :** माईन्स, दन्त चिकित्सक।
- **मंगल-बुध :** मैकेनिकल इंजीनियर, टेलीफोन एक्सचेंज में नौकरी, शल्य चिकित्सा, टेक्निशियन आदि के कार्य देगा।
- **मंगल-राहु :** अंतरिक्ष यात्रा और अंतरिक्ष विज्ञान में रुचि देगा।
- **गुरु-शनि :** चिकित्सक।
- **बुध-शनि :** शार्ट हैंड राइटिंग, इंजीनियर के क्षेत्र में सफलता देगा। इसी प्रकार अतकनीकी कार्य के ग्रह योग इस प्रकार है:
- **सूर्य-बुध :** प्रबंधकीय कार्य, गणितज्ञ, ज्योतिषी, वकील, अकाउण्टेंट बनाने में सहयोगी है।
- **सूर्य-बुध-शुक्र :** कवि, कलाकार, लेखक।
- **सूर्य-गुरु :** शिक्षक, जज, धार्मिक कार्य।
- **सूर्य-गुरु-बुध :** मुन्सिफ।
- **सूर्य-शुक्र :** ट्रांसपोर्ट, महिलाओं का अस्पताल।
- **चन्द्र-गुरु :** मंत्री, राजा, कप्तान जैसे कार्य कराएगा।
- **बुध-गुरु :** लेखक, गणितज्ञ, बैंक क्लर्क, ट्रैजरी मैनेजर (प्रबंधक) (बुध लेखन, गणित, गुरु बैंक ट्रेजरी) आदि के कार्य देगा।
- **बुध-शुक्र :** अच्छा कलाकार, ड्रामा लेखक, साहित्य, फोटोग्राफी में रुचि देगा।
- **चन्द्र-बुध :** एजेंट, कपड़ा का व्यवसायी।
- **चन्द्र-शुक्र :** कलाकार, ड्रामा कलाकार, फिल्म कलाकार आदि बनाएगा।
- **गुरु-शुक्र :** शिक्षक, धार्मिक संगीतकार, कलाकार, कवि (राशि के अनुसार) बनाएगा।

यहाँ पर संबंध बनाने के लिए इन ग्रहों का साथ होना जरूरी नहीं है। यदि इन ग्रहों का दृष्टि संबंध हों या भाव परिवर्तन हो तब भी उपरोक्त कार्य करने के योग बनेंगे। इन ग्रहों के साथ-साथ लग्न और दशम भाव के गुणधर्म का भी ध्यान रखना आवश्यक है। जैसे:

- **मेष :** पुलिस, मिलिट्री सेवा, सर्जन, घड़ीसाज, चोरी, जमीन, अग्नि से संबंधित स्थान पर कार्य आदि का द्योतक है।
- **वृष :** ब्रोकर, कंपनी मैनेजर, कलाकार, संगीतकार, खेती-बागवानी, बूटीक आदि के कार्य देगा।
- **मिथुन :** लेखक, दुभाषिया, इंजीनियर, पत्रकारिता, अकाउण्टेंट, शिक्षक, पत्रवाहक, जासूस, प्रिंटिंग, डाक सेवा का कार्य।
- **कर्क :** आयात-निर्यात के कारोबारी, जल सेना, धर्मगुरु, शिक्षक, मत्स्य पालन, पलम्बर, नाविक, रेस्टोरेंट, कैटरर्स, नर्स, पुरातन सामान के विक्रेता, पब्लिशर, दूध से बने सामान के विक्रेता, अच्छा वक्ता आदि कार्य।
- **सिंह :** सरकारी अधिकारी, स्टॉक एक्सचेंज, सेना, अग्नि के स्थान, वन अधिकारी, कलाकार, पैसा बनाने का कारखाना, दवा के क्षेत्र के रोजगार।
- **कन्या :** गणितज्ञ, शिक्षक, लेखक, दूत, पत्रवाहक, इंजीनियर, स्वास्थ्य विभाग, अस्पताल, रगाई-छपाई, कलाकारी के काम।
- **तुला :** संगीतकार, कलाकार, जज, वन अधिकारी, विमान अधिकारी, ब्रोकर, विक्रेता, लकड़ी के फर्नीचर, मिठाई का कारोबार, चांदी का कारोबार, वकालत के कार्य।
- **वृश्चिक :** जीवन बीमा, दवा, चिकित्सा विभाग, नौसेना, रसायनशास्त्री, तेल और स्प्रिट के विक्रेता।
- **धनु :** बैंक अधिकारी, मंदिर, स्कूल, वकालत, सलाहकार।

...पृष्ठ 64 का शेष

तकनीकी कार्यक्षेत्र के ग्रह योग

" **मकर :** मंत्री, राजनैतिक दूत आदि के कार्य। इसके अतिरिक्त नौकरी, कड़ी मेहनत का काम, मजदूर, पहरेदार, खदान के मजदूर आदि के कार्य।

" **कुंभ:** आविष्कारक, खोजकर्त्ता, विद्युत कार्य, रेलवे, बस, अनुसंधान कार्य, रक्षा विभाग, उद्योग, पुल और जल यातायात में कार्य।

" **मीन :** मत्स्य पालन, विदेशी व्यापार, वकालत, धर्म गुरु, बैंक अधिकारी, प्रोफेसर, तरल पदार्थ से संबंधित कार्य।

इस तरह ग्रह और राशि के गुण-धर्म को ध्यान में रखते हुए बहुत ही सहज तरीके से व्यक्ति के तकनीकी और तकनीकी कार्यक्षेत्र के विषय में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

○○○

- 17, सरदार पटेल पथ,
उत्तरी श्री कृष्णापुरी, पटना-13